औ़रत और पर्दा

प्रोफ़ेसर डॉ० मुहम्मद मसऊद अहमद अलैहिर्रहमा
(एम. ए., पी. एच. डी.)

बएहतेमाम
मुफ़्ती मुहम्मद मुजाहिद हुसैन हबीबी

नाशिर
मदीनतुल उ़लूम इन्स्टीट्यूट, तोपसिया
ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
6 तालतला लेन, कलकत्ता–14 Mob.: +91 9830367155

और घरों में ठहरी रहो और बेपर्दा न रहो

जैसे अगली जाहिलीयत की बेपर्दगी (अह़ज़ाबः 33)

ऑ़रत और पर्दा

प्रोफ़ेसर डॉ० मुह़म्मद मसऊ़द अह़मद अ़लैहिर्रह़मा
(एम. ए., पी. एच. डी.)

बएहतेमाम

मुफ़्ती मुह़म्मद मुजाहिद हुसैन ह़बीबी

हिन्दी

मुग़ीस़ अह़मद ख़ान क़ादिरी
अमेठी (यू० पी०)

नाशिर

मदीनतुल उ़लूम इन्स्टीट्यूट, तोपसिया

ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

6 तालतला लेन, कलकत्ता–14 Mob.: +91 9830367155

Rs. 20/-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

निसाइयात (औरत) की तारीख़ बड़ी दर्दनाक और कर्बनाक (तकलीफदह) है, ये इन्सानियत की पेशानी पर बदनुमा दाग़ है, अफ़सोस! जिसके आग़ोश में इन्सान ने परवरिश पाई, उसी आग़ोश (गोद) को ज़ख़्मी किया। जिसने बुलन्दियों पर पहुँचाया, उसी को पस्तियों में डाला–––सरज़मीने अ़रब में अय्यामे जाहिलीयत (जाहिलीयत के दिनों) में मुआ़शरे (समाज) की नज़र में ख़वातीन की जो क़द्र व क़ीमत थी उसका कुछ अन्दाज़ा एक अ़रब शायर के इन ख़्यालात से होता हैः

1– लड़कियों को दफ़्न करना ही सबसे बड़ी फ़ज़ीलत है।[1]

2– मौत औरत के हक़ में अ़ज़ीज़ तरीन मेहमान है।[2]

कुरआने करीम के मुतालआ़ (पढ़ने) से मालूम होता है कि उस ज़माने में लड़कियों की विलादत मर्द के लिये अ़ज़ाबे जाँ थी–––जब कोई मर्द ये ख़बर सुनता तो उसका चेहरा मारे गुस्से के सियाह हो जाता और वो उसी ग़म में कुढ़ता[3]–––लोग लड़कियों को ज़िन्दा दफ़्न कर दिया करते थे जिसके लिये कुरआने करीम में फ़रमाया गया कि क़यामत के दिन दफ़्न होने वाली लड़की से पूछा जाएगा बता तुझे किस जुर्म की पादाश में क़त्ल किया गया?[4] यानी ऐसे सफ़्फ़ाक बाप को क़यामत के दिन छोड़ा नहीं जाएगा। एक सह़ाबी ने अय्यामे जाहिलीयत में अपनी बेटी को ज़िन्दा दफ़्न करने का दर्दनाक वाक़िया सुनाया तो वो ख़ुद भी रोए और

---

[1] नियाज़ फ़तहपुरी, सहाबियात, मतबूआ़ः कराची 1962 ई0, पेजः 13

[2] नियाज़ फ़तहपुरी, सहाबियात, मतबूआ़ कराची 1962 ई0, पेजः 31

[3] कुरआने हकीम, सूर–ए–ज़ख़रफ़, आयतः 17

[4] कुरआने हकीम, सूर–ए–तकवीर, आयतः 8, 9

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भी रोते रहे———

हिन्दुस्तान का ह़ाल अ़रब से भी बद तर था, यहाँ मरने वाले शौहरों के साथ उनकी ज़िन्दा बीवियाँ जलाई जाती थीं, इस रस्म को ''सती'' के नाम से पुकारा जाता था। फ्रांस के मशहूर मुअर्रिख़ (इतिहासकार/Historian) डॉक्टर गसतावली बान ने लिखा हैः–

———''ये रस्म हिन्दुस्तान में आ़म हो चली थी क्योंकि यूनानी मुअर्रिख़ों ने इसका ज़िक्र किया है''[5]———इब्ने बतूता (वफ़ात 779 हिजरी/1378 ई0) जब हिन्दुस्तान आया तो उसने ये वह़शतनाक मन्ज़र ख़ुद देखे जिसका अपने सफ़रनामे में ज़िक्र किया है।[6] ऐसा ही एक मन्ज़र देखते देखते वो बेहोश होकर घोड़े से ज़मीन पर गिरने लगा तो लोगों ने सँभाला।[7]———1839 ई0 में लॉर्ड बैन्टिक ने सती होने या सती में मदद देने को जुर्म क़रार दिया। फिर भी जल्द ही हिन्दुस्तान में एक ऐसा वाकि़या पेश आया जिसमें शौहर की लाश के साथ उसकी ज़िन्दा बेवा को फूँक दिया गया। ये ख़बर सारी दुनिया में ह़ैरत से सुनी गई———यूरोप भी इस मामले में किसी से पीछे नहीं रहा, वहाँ 1494 ई0 और 1521–1522 ई0 में जादूगरी के इल्ज़ाम में सैकड़ों औ़रतों और बच्चों को ज़बह कर दिया गया।[8]———डॉक्टर स्प्रिंगर ईसाई के मुताबिक़ दुनिया में 90 हज़ार औ़रतों को मुख़तलिफ़

---

[5] डॉक्टर गसतावली बान, तमद्दुने हिन्द (तर्जमा उर्दूः सय्यद अ़ली बिलग्रामी) मतबूआ़ः कराची, 1962 ई0, पेजः 238

[6] अबू अ़ब्दुल्लाह इब्ने बतूता, सफ़रनामा इब्ने बतूता (तर्जमा उर्दूः रईस अह़मद जाफ़री) मतबूआ़ः कराची, 1986 ई0, पेजः 5

[7] अबू अ़ब्दुल्लाह इब्ने बतूता, सफ़रनामा इब्ने बतूता (तर्जमा उर्दूः रईस अह़मद जाफ़री) मतबूआ़ः कराची, 1986 ई0, पेजः 36–37

[8] नियाज़ फ़तहपुरी, सहाबियात, पेजः 11

ना–माकूल इल्ज़ामात में ज़िन्दा जला दिया गया।[9]———कुछ दिनों पहले बोस्निया में मुसलमान औ़रतों के साथ नसारा ने जो सफ़्फ़ाकाना सुलूक किया, सुन सुन कर इन्सानियत की रूह़ काँप उठी। अमरीका जिसका शुमार तरक़्क़ी याफ़्ता बर्रे आज़म (महाद्वीप) में किया जाता है वहाँ औ़रतों के साथ जो सुलूक किया जा रहा है, शायद तारीख़ (इतिहास/History) के किसी दौर में ऐसा सुलूक नहीं किया गया होगा।——— हर पाँच मिनट के बाद एक औ़रत की इ़ज़्ज़त का दामन तार तार किया जाता है। यानी चौबीस घण्टे में इ़स्मत–दरी (बलात्कार/Rape) के 288 ह़ादस़ात रोनुमा होते हैं———आप ख़ुद अपने ज़मीर (दिल) से पूछें ये जन्नत है या जहन्नम? मुख़तलिफ़ जराएम की तादाद इससे भी ज़्यादा है। चौबीस घण्टे में 1800 जुर्म किये जाते हैं।[10] (हम अल्लाह के लिये हैं और उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं!)

इस्लाम ने औ़रत पर बड़ा करम फ़रमाया और उसको पस्तियों से बुलन्दियों पर पहुँचाया और ऐसा रऊफ़ व रह़ीम रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) भेजा जिसने दुनिया की चीज़ों में ख़ुशबू और औ़रत को पसन्द फ़रमाया———रूसी फ़लसफ़ी टाल्सटाय (वफ़ात 1910 ई0) ने हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरत पर इज़हारे ख़्याल करते हुए ये ह़दीस़ पेश की हैः ''दुनिया की चीज़ें सिर्फ़ माल व मताअ़ (दौलत) हैं और दुनिया की अच्छी मताअ़ नेक औ़रत है।''[11]———

[9] नियाज़ फ़तह़पुरी, सहा़बियात, पेजः 11

[10] अख़बार जंग, कराची, शुमारा 5 मई 1993 ई0

[11] टाल्सटॉय, पैग़म्बरे इस्लाम (तर्जमा उर्दू) मतबूआः लाहौर, 1920 ई0, पेजः 45

आपने औ़रतों पर जो करम फ़रमाया वो इन्सानियत की तारीख़ में सुनहरी हुरूफ़ से लिखा जाएगा। चन्द इरशादात और वाक़ियात मुलाह़ज़ा हों:

1– एक सह़ाबी ने अ़र्ज़ किया: ''या रसूलल्लाह! सबसे ज़्यादा मुझ पर किसका ह़क़ है?'' फ़रमाया: ''तेरी माँ का'' ये सवाल तीन मरतबा किया गया, आपने यही फ़रमाया, ''तेरी माँ का''। फिर चौथी मरतबा अ़र्ज़ किया: ''सबसे ज़्यादा मुझ पर किसका ह़क़ है?''–––तो फ़रमाया: ''तेरे बाप का''[12]

आपने मुलाह़ज़ा फ़रमाया, इस्लाम की नज़र में ''माँ'' की कितनी क़द्रो मंज़िलत है।

2– ह़ज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु तआ़ला वज–हहुल करीम की वालिदा ह़ज़रत फ़ातिमा बिन्ते असद (वफ़ात 11 हिजरी/632 ई0) का जब इन्तिक़ाल हुआ, हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी चादर शरीफ़ उनके कफ़न के लिये अ़ता फ़रमाई–––और जब लह़द खोदी गई तो आपने लह़द में उतर कर अपने दस्ते मुबारक से बग़ली क़ब्र खोदी और मिट्टी बाहर निकाली और फिर ख़ुद लेट कर देखा[13]–––अल्लाहु अकबर! इस क़ब्र शरीफ़ की मंजिलत का क्या कहना! अफ़सोस सैकड़ो बार अफ़सोस जन्नतुल ब़कीअ़ शरीफ़ में इस क़ब्र शरीफ़ के चारो तरफ़ दीवारें चुन दी गई हैं, शायद इस लिये कि आ़शिक़ाने रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) इसकी ज़ियारत से मह़रूम रहें।

3– ह़ज़रत उम्मे सलमा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा (वफ़ात 63 हिजरी/682 ई0) बेवा हो गईं, आपके साथ यतीम बच्चे भी थे। परेशानी का आ़लम, कोई मददगार नहीं–––सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने

---

[12] बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ (इस ह़दीस़ पर सबका इत्तेफ़ाक़ है।)

[13] अबू नस्र मंजूर अह़मद शाह मदीनतुर्रसूल, मतबूआ़: लाहौर, 1992 ई0, ब–ह़वाला ख़ुलासतुल वफ़ा, पेज: 293

अपने लिये पैग़ाम भेजा———हज़रत उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा चूँकि अयालदार (बाल बच्चों वाली) थीं, ख़्याल आया कि शायद सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बच्चों का बोझ महसूस करें, आपने उज़्र पेश करते हुए फ़रमायाः ''अयालदार हूँ, यतीम बच्चे मेरे साथ हैं''———सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो जवाब इनायत फ़रमाया वो उन मर्दों के लिये इबरत व नसीहत है जो अयालदार बेवा औरतों का बोझ उठाने से पहलू तही करते (बचते) हैं———आपने फ़रमायाः ''तुम्हारी अयाल, अल्लाह और उसके रसूल की अयाल है''[14]———अल्लाहु अकबर!

4— आपकी रज़ाई (दूध शरीक) बहन शीमा बिन्ते हारिस हालते कुफ़्र में एक जिहाद में क़ैद होकर आईं और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने पेश की गईं तो आप पहचान गए और अपनी चादर शरीफ़ पर बिठाया, फ़रमायाः ''अगर तुम मेरे पास रहना चाहती हो तो मेरे पास रहो, अपने क़बीले में जाना चाहती हो तो जा सकती हो''———शीमा ने अर्ज़ किया कि ''अपने क़बीले में जाना चाहती हूँ''———आपने बहुत से ऊँट और बकरियाँ देकर एज़ाज़ो एकराम (इज़्ज़त) से रवाना किया।[15]

इन वाक़ियात से अन्दाज़ा होता है कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़वातीन पर कितने मेहरबान थे?———औरतों पर आपका यही करम था कि जब पहली मरतबा मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हुए तो ख़वातीन और बच्चियाँ इस्तिक़बाल के लिये बाहर आ गईं और ख़ुशी के तराने गाने लगीं———मदीना मुनव्वरा में हुज़ूरे अनवर

---

[14] अबू नस्र मंज़ूर अहमद शाह मदीनतुर्रसूल, ब—हवाला ज़रक़ानी, जिल्दः 2, पेजः 282 और मदारिजुन्नुबुव्वा, जिल्दः 2, पेजः 815

[15] अबू नस्र मंज़ूर अहमद शाह मदीनतुर्रसूल, ब—हवाला सीरते हल्बिया, जिल्दः 1, पेजः 440

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मुस्तकि़ल क़याम से उनको कितनी ख़ुशी थी इसका अन्दाज़ा इस शेर से लगाया जा सकता है।

(तर्जमाः हम बनू नज्जार की बेटियाँ हैं किस क़दर ख़ुश नसीब हैं कि मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमारे पड़ौसी हैं।[16])

जब सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दुनिया से पर्दा फ़रमा रहे थे तो खि़दमते अक़दस में ख़वातीन ही मौजूद थीं, ग़मो अलम (तकलीफ़) का आ़लम था, ह़ज़रत सफि़या रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा (वफ़ात 50 हिजरी/670 ई0) फ़रमा रही थीं: ''ऐ अल्लाह आपकी सारी तकलीफ़ें मुझको अ़ता फ़रमा दे''–––मुह़ब्बत भरी इस दुआ़ को सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सुन रहे थे–––फ़रमायाः ''सफि़या ने सच कहा'' आपने वसीयत फ़रमाई कि जब जसदे अतहर (पाक जिस्म मुबारक) पर मर्द सलातो सलाम पढ़ चुकें तो औ़रतों से कहना कि वो क़तार–दर–क़तार आकर सलातो सलाम पेश करें[17]–––सुब्ह़ान अल्लाह! कैसा करम फ़रमाया कि दुनिया से पर्दा फ़रमाते वक़्त भी याद रखा। ये तमाम ह़क़ीक़तें ख़वातीन के लिये बड़े फ़ख़्र का बाइ़स हैं, वो जितना फ़ख़्र करें कम है। किसी दूसरी मज़हबी किताब में ख़वातीन को इतनी अहमियत नहीं दी गई जितनी अहमियत कुरआने ह़कीम ने दी है।

सूर–ए–मरयम, ह़ज़रत मरयम अ़लैहस्सलाम के नाम से मअ़नून की गई–––सूर–ए–बक़रा, सूर–ए–तह़रीम, सूर–ए–नूर वग़ैरा में ख़वातीन के लिये बहुत से अह़काम व मसाइल हैं–––फिर अहम ख़वातीन का कुरआने करीम में

---

[16] अबू नस्र मंजूर अह़मद शाह मदीनतुर्रसूल, ब–ह़वाला ख़ुलासतुल वफ़ा, पेजः 136

[17] शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस़ देहलवीः मदारिजुन्नुबुव्वा, जिल्दः 2, पेजः 440

ज़िक्र किया गया है मस़लन ह़ज़रते ह़व्वा अ़लैहस्सलाम, ह़ज़रत आ़इशा रदियल्लाहु अ़न्हा, ह़ज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम और ह़ज़रत शुऐ़ब अ़लैहिस्सलाम की साह़बज़ादियाँ, ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की वालिदा और हमशीरा (बहन), ह़ज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की ज़ौज–ए–मुकर्रमा (मोह़तरम बीवी), ह़ज़रत मरयम अ़लैहस्सलाम, मलिक–ए–फ़िरऔ़न, मलिक–ए–सबा और सह़ाबियात रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुन्ना।

अल्लाह तआ़ला ने औ़रत और मर्द के इज़्दिवाजी तअ़ल्लुक़ को इतना मुक़द्दस बनाया कि उसको अपनी निशानियों में से एक निशानी क़रार दिया[18]–––और इसका मक़सद ये बयान फ़रमाया कि इन्सान सुकून व चैन ह़ासिल करे और इस तअ़ल्लुक़ को मुह़ब्बत व मेहरबानी का तअ़ल्लुक़ क़रार दिया जिसमें हवस–परस्ती का शुब्हा तक नहीं–––इस्लाम का ये तसव्वुर कहीं नहीं मिलता जबकि जर्मन फ़्लास्फ़रन नटशे ने तो यहाँ तक लिखा है:

''औ़रत का मक़सदे ह़यात सिर्फ़ ये है कि वो मर्द की क़ैद में रहे और उसकी ख़िदमत करती रहे''[19]–––रूस का मशहूर फ़लसफ़ी काउन्ट लिव टाल्सटॉय (वफ़ात 1910 ई0) भी ख़वातीन के मुतअ़ल्लिक़ अच्छी राय न रखता था–––उसने इस्लाम की तर्जमानी करते हुए अपनी राय का इस तरह इज़हार किया है: ''मर्द का फ़र्ज़ है कि औ़रत से अच्छा सुलूक करे और उसकी बाग ढीली न छोड़े बल्कि उसे घर में बन्द रखे क्योंकि घर औ़रत की आज़ादी के लिये काफ़ी है।''[20]–––निकाह़ जैसे मुक़द्दस रिश्ते के बारे में भी

---

[18] कुरआने ह़कीम, सूर–ए–रूम, आयत: 21

[19] नियाज़ फ़तह़पुरी, सह़ाबियात, पेज: 14

[20] टाल्सटॉय, पैग़म्बरे इस्लाम (तर्जमा उर्दू: मुह़म्मद फ़ैज़ुल ह़सन) मतबूआ़: लाहौर, 1920 ई0, पेज: 54

टाल्सटाय की राय अच्छी नहीं। शायद इस लिये कि इस तजर्बे में वो नाकाम व नामुराद रहा, वो लिखता हैः

''हमारे ज़माने में निकाह़ मह़ज़ एक धोखा और एक फ़रेब हो गया है–––हम इसको मह़ज़ नफ़्सानी ख़्वाहिश पूरा होने का वसीला जानते हैं।''[21]

अल्लाह तआ़ला ने ख़वातीन को बड़ी रिआ़यतें दी हैं और रंज व मुसीबत में उनका पास व लिह़ाज़ रखा है–––मस़लन मुतल्लक़ा (तलाक़ दी हुई) औ़रत के लिये ये हुक्म है कि इ़द्दत पूरी होने तक उसका ख़ाविन्द उसको राह़त व आराम से अपने घर में रखे, उस पर तंगी न करे, अगर वो ह़ामिला (पेट से) है तो फिर ह़मल की मुद्दत पूरी होने तक उसका सारा ख़र्चा बर्दाश्त करे और उसकी आसाइश व आराम का पूरा पूरा ख़्याल रखे। बच्चे की विलादत के बाद अगर मुतल्लक़ा बीवी दो साल उसको दूध पिलाती है तो दो साल की उजरत भी अदा करे[22]–––शायद ये बातें अ़जीब लगें मगर ये सब कुछ कुरआने करीम में है। हम ख़वातीन को बताते नहीं, अपने हुक़ूक़ ख़ूब याद रखते हैं। ख़वातीन को अह़कामे शरीअ़त की पैरवी करते हुए कस्बे मुआ़श (कमाने) की इजाज़त है, कुरआने करीम में इरशाद हुआ कि मर्द की कमाई में से मर्द का ह़िस्सा है और औ़रत की कमाई में से औ़रत का ह़िस्सा है[23]–––हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ौज–ए–मुतह्हरा ह़ज़रत ज़ैनब बिन्ते ह़जश रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा (वफ़ात 20 हिजरी/640 ई0) अपने हाथ से

---

[21] टाल्सटॉय, पैग़म्बरे इस्लाम (तर्जमा उर्दू मुह़म्मद फ़ैज़ुल ह़सन) मतबूआ़ः लाहौर, 1920 ई0, पेजः 54

[22] कुरआने ह़कीम, सूर–ए–तलाक़, आयतः 6

[23] कुरआने ह़कीम, सूर–ए–निसा, आयतः 32

चमड़े को दबाग़त देतीं, फ़रोख़्त करके जो रक़म आती ग़रीबों और मिसकीनों में तक़सीम कर देतीं[24]———

अल्लाह तआ़ला ने घरों में रहने वाली शरीफ़ ख़वातीन की इ़ज़्ज़ते नफ़्स की हिफ़ाज़त के लिये मर्दों को बग़ैर इजाज़त लिये घर के अन्दर दाख़िल होने से मना फ़रमाया।[25] अगर किसी ख़ातून से बात करनी है तो अदब ये सिखाया कि पर्दे के पीछे से बात की जाए।[26] अगर कोई दावत पर बुलाए और घर में ख़वातीन भी मौजूद हों तो खाने के बाद ख़्वाह–म–ख़्वाह बातों में मसरूफ़ न हों बल्कि खा पीकर चले आएँ[27] हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तुफ़ैल ये सारे आदाब हमको मिल गए, अब ये हमारी बद नसीबी है कि हम अ़मल नहीं करते। अल्लाह तआ़ला ने हमको पैदा किया, उससे ज़्यादा कौन हमारे ह़ालात से वाक़िफ़ होगा? हमारी भलाई और बुराई का उससे ज़्यादा किसको इ़ल्म होगा?———हमको जिन बातों का हुक्म दिया गया है और जिनसे रोका गया, वो सिर्फ़ और सिर्फ़ हमारी भलाई के लिये———अल्लाह तआ़ला बेनियाज़ है, ज़रा सोचें तो सही! बन्दों से उसको क्या ग़रज़ होगी?———वो हमारे फ़ाइदे के लिये हमको हुक्म देता है———पर्दे के बारे में ख़वातीन को जो हुक्म दिया गया वो उन्हीं के फ़ाइदे के लिये अगर वो सोचें और ग़ौरो फ़िक्र करें———सूर–ए–नूर और सूर–ए–अह़जाब में ख़वातीन के पर्दे से मुतअ़ल्लिक़ जिन आदाब का ज़िक्र किया गया वो हमारी तवज्जो के मुस्तह़िक़ हैं, तवज्जो फ़रमाएँ———

---

24 इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी, अल–इसाबा मारिफ़तुस्सह़ाबा, जिल्दः 2, पेजः 602

25 क़ुरआने ह़कीम, सूर–ए–अह़ज़ाब, आयतः 53, सूर–ए–नूर, आयतः 27

26 क़ुरआने ह़कीम, सूर–ए–अह़ज़ाब, आयतः 53, सूर–ए–नूर, आयतः 27

27 क़ुरआने ह़कीम, सूर–ए–अह़ज़ाब, आयतः 53

1– अपने अपने घरों में रहें, दौरे जाहिलीयत की तरह बेपर्दा न फिरें।[28]

2– दुपट्टे अपने गिरेबानों पर डाली रहें और गै़र मर्दों को अपना सिंगार न दिखाएँ।[29]

3– हाँ इन रिश्तेदारों पर छुपा सिंगार ज़ाहिर हो जाए तो ह़रज नहीं मस़लन ख़ाविन्द, बाप (दादा परदादा), ससुर, बेटे, भाँजे, भतीजे, बहुत ही बूढ़े और नाबालिग़ नौकर और नौ–उ़म्र लड़के।[30]

4– ख़वातीन ज़रूरत के वक़्त बाहर निकलें तो चादर का एक हि़स्सा अपने मुँह पर डाल लें ताकि पहचानी जाएँ (कि शरीफ़ हैं) और शरारत करने वाले छेड़ छाड़ न करें।[31]

5– मुसलमान मर्दों को हुक्म दिया जाए कि वो अपनी निगाहें नीची रखें।[32]

6– मुसलमान औ़रतों को भी हुक्म दिया जाए कि वो अपनी निगाहें नीची रखें।[33]

आपने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि कुरआने ह़कीम हम से किस शर्मो ह़या और गै़रतो ह़मीयत का तक़ाज़ा करता है। रूसी फ़लसफ़ी टाल्सटॉय ने भी सज–बन कर, ख़ुशबू लगाकर औ़रत के बाहर निकलने से मुतअ़ल्लिक़ ये ह़दीस़ पेश की है जिसमें हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं: ''जो औ़रत ख़ुशबू लगाकर घर से निकली फिर इस ग़रज से लोगों के पास से गुज़री कि वो उसकी ख़ुशबू

---

[28] कुरआने ह़कीम, सूर–ए–अह़ज़ाब, आयत: 33

[29] कुरआने ह़कीम, सूर–ए–अह़ज़ाब, आयत: 31

[30] कुरआने ह़कीम, सूर–ए–अह़जाब, आयत: 31

[31] कुरआने ह़कीम, सूर–ए–अह़ज़ाब, आयत: 59

[32] कुरआने ह़कीम, सूर–ए–नूर, आयत: 30

[33] कुरआने ह़कीम, सूर–ए–नूर, आयत: 31

सूँघें, वो ज़ानिया है और जिन्होंने उसे देखा उनमें से एक एक की आँख ज़ानिया है।''[34]

मौजूदा सूरते ह़ाल, दर्दमन्द दिल के लिये तशवीशनाक है, जिससे घर में रहने और पर्दा करने के लिये कहा गया था, वो बेपर्दा घर से बाहर है———और जिससे दरवाज़ा खुले रखने और ज़रूरतमन्दों की ज़रूरत पूरी करने के लिये कहा गया था, वो बन्द दरवाज़ों और सख़्त पर्दों में हैं———इस्लामी मुआ़शरे के हर ह़ाकिम व अफ़सर को हिदायत की गई थी वो दरवाज़ा खुला रखे, पहरे न लगाए, मगर यहाँ तो रसाई (पहुँचना) भी बहुत मुश्किल है और कभी कभी नामुम्किन भी हो जाती है———ख़वातीन के आदाब मर्दों ने अपना लिये, ऐ काश! हम अ़क़्ले सलीम से काम लेते!

कुरआने ह़कीम में पर्दे के मुतअ़ल्लिक़ जो कुछ हिदायात दी गईं ह़ज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा (वफ़ात 58 हिजरी/677 ई0) ने उस पर अ़मल करके बेहतरीन नमूना पेश किया। अज़वाजे मुतह्हरात में इ़ल्मो दानिश (समझ) में कोई आपकी तरह न था———

तारीख़ व ह़दीस़ से हमें इन वाक़ियात का इ़ल्म होता है:

1— एक मर्तबा ह़ज़रत ह़फ़सा बिन्ते अ़ब्दुर्रह़मान रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा बारीक दुपट्टा ओढ़े ह़ज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु अ़न्हा की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुईं। आपने उनका दुपट्टा चाक कर दिया और फ़रमाया ''अल्लाह तआ़ला ने सूर–ए–नूर में क्या फ़रमाया है?''———इस तम्बीह के बाद दबीज़ (मोटे) कपड़े की चादर मँगवा कर ह़ज़रत ह़फ़सा रदियल्लाहु अ़न्हा को इ़नायत फ़रमाई।[35]

---

[34] टाल्सटॉय, पैग़म्बरे इस्लाम (तर्जमा उर्दू) मतबूआ़: लाहौर, 1920 ई0, पेज: 44

[35] अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन सअ़द ज़ोहरी, तबक़ाते इब्ने सअ़द, जिल्द: 8, पेज: 50

2– एक मर्तबा किसी के यहाँ आपका जाना हुआ, साहिबे ख़ाना (घर वाले) की दो जवान लड़कियाँ बग़ैर चादर, बारीक दुपट्टा ओढ़े नमाज़ पढ़ रही थीं, आपने हिदायत फ़रमाई कि आइन्दा दबीज़ कपड़े की चादर ओढ़ कर नमाज़ पढ़ी जाए।[36]

3– एक मर्तबा इब्ने इसहाक़ नाबीना हज़रत आइशा रदियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुए, आप पर्दे में हो गईं। इब्ने इसहाक़ ने अर्ज़ किया कि मैं तो नाबीना हूँ, आपने पर्दा क्यों फ़रमाया?, फ़रमायाः मैं तो बीना हूँ–––देख रही हूँ[37]

4– हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक ज़माने में ख़वातीन मस्जिदे नबवी शरीफ़ में हाज़िर होतीं और ईदैन के लिये भी हाज़िर होतीं मगर नामुसाइद (बिगड़े) हालात की वजह से अहदे फ़ारूक़ी में ख़वातीन पर पाबन्दी लगा दी गई और उन्होंने मस्जिदे नबवी शरीफ़ में आना बन्द कर दिया। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआला अन्हा ने हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु (वफ़ात 23 हिजरी/663 ई0–664 ई0) के इस अमल की ताईद फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमायाः ''अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम होता कि ख़वातीन की हालत ये हो गई है तो आप उनको मस्जिद में आने से उस तरह रोकते जिस तरह बनी इसराईल की औरतों को रोक दिया गया था।''[38]

ऊपर दर्ज वाक़ियात से मालूम हुआ कि हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआला अन्हा ख़वातीन से क्या तवक़्क़ो रखती हैं और क्या चाहती हैं–––इस्लाम जहाँ जहाँ फैला

---

[36] अहमद बिन हम्बल शीबानी, अल–मुसनद, जिल्दः 6, पेजः 796

[37] तबक़ाते इब्ने सअद, जिल्दः 18, पेजः 49

[38] नियाज़ फ़तहपुरी, सहाबियात, पेजः 58

एशिया में, अफ़्रीक़ा में, यूरोप में–––साथ साथ पर्दा भी फैलता चला गया–––

ये हमेशा इस्लामी शआ़एर (निशानियों) में एक अ़ज़ीम शेआ़र (निशानी) शुमार किया गया–––इन्तिहाई उ़रूज के ज़माने में जबकि इस्लामी सल्तनत तीन बर्रे आज़मों (महाद्वीपों) पर फैली हुई थी, पर्दा मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम ख़वातीन के दरमियान एक इम्तियाज़ी निशान बना रहा–––बल्कि ग़ैर मुस्लिम हुकूमतों में भी ये इम्तियाज़ क़ाएम रहा।

1914 ई0 से क़ब्ल रूस में मुस्लिम ख़वातीन पर्दे में रहतीं, कुरआने करीम हि़फ़्ज़ करतीं, वहाँ कुरआन हि़फ़्ज़ करने का औ़रतों और मर्दों में आ़म रवाज था। (अख़बारूल मुअय्यिद, मिस्र, 15 अगस्त 1902 ई0)–––रूस की मुस्लिम ख़वातीन मदारिस भी क़ाएम करतीं, एक रूसी ख़ातून सफ़िया ख़ानम ने अपने ख़र्च से एक अ़ज़ीमुश्शान मदरसा क़ाएम किया था–––अल–ग़रज़ गुज़रे ज़माने में इस्लामी मुआ़शरे में जो कुछ तरक़्क़ी हुई, पर्दे में रह कर ही हुई। हद तो ये है कि ख़वातीन जिहाद में शरीक होतीं, ज़ख़्मियों की मरहम पट्टी करतीं, कभी ख़ुद जिहाद में हि़स्सा लेतीं, ये सब कुछ ह़या के साथ, पर्दे में रह कर ही किया जाता। दौरे जदीद (नए दौर) में जहाँ इस्लामी इन्क़िलाब आया या इस्लाम के नाम पर इन्क़िलाब आया वहाँ पहली बात ये देखी गई कि बेपर्दा औ़रतें, पर्दादार हो गईं और उनकी हैबत दुश्मनाने इस्लाम के दिलों में ऐसी बैठी कि वो ख़ौफ़ज़दा हो गए–––जदीद मुआ़शरे (नए समाज) की बेपर्दगी ने इस्लामी मुआ़शरे को कुछ न दिया और न तारीख़ में किसी बाब का इज़ाफ़ा किया–––ये दर्दमन्द ख़वातीन के लिये सोचने की बात है। अगर बेपर्दगी तरक़्क़ी की ज़ामिन होती तो आज सारे आ़लम में हम इस तरह रूसवा न होते–––मशहूर मुअर्रिख़ आर्नल्ड टोएम्बी ने एक जगह लिखा है कि इन्सानी मुआ़शरों की तबाही में औ़रत की आज़ाद

चलन और बेपर्दगी को बड़ा दख़्ल है। मुअर्रिख़ मौसूफ़ ने आलमी तारीख़ को गहरी नज़र से पढ़ने के बाद इस राय का इज़हार किया। इस लिये इसको किसी तअस्सुब या तंगदिली पर महमूल नहीं किया जाना चाहिये बल्कि इस तारीख़ी हक़ीक़त पर ठण्डे दिल से ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये---हक़ीक़त ये है कि इस्लाम ने मुआशरे की बुनियाद पाकीज़गी पर रखी है। हमागीर पाकीज़गी ज़िन्दगी के हर शोबे की पाकीज़गी,---मग़रिबी साज़िशीयों ने इस्लाम की हर माकूल बात को नामाकूल बना कर दिखाया, ऐसा प्रोपैगन्डा किया कि अक़्लें माऊफ़ (अपाहिज) हो गईं और आँखें पट हो गईं---इस्लाम ने ख़वातीन पर बेशुमार एहसानात किये मगर एक पर्दे की माकूल हिदायत (जो ख़वातीन ही की इस्मत व इफ़्फ़त (इज़्ज़त और पाक-दामनी) और हुस्नो जमाल की हिफ़ाज़त की ज़मानतदार है) बाज़ ख़वातीन को अच्छी नहीं मालूम होती, दुश्मनाने इस्लाम ने इसकी अच्छाइयों को छुपाया और नाम निहाद बुराइयों को उछाला---इस तरह ख़वातीन के ज़हनों को परागन्दा करके इस्लाम की सच्चाई से उनको दूर कर दिया---ज़रा ग़ौर करें, ख़वातीन की बेपर्दगी ने जिस्मानी आराइश व ज़ेबाइश का रास्ता खोला, फिर उसने बेहयाई की सूरत इख़्तियार की और बेहयाई ने उरयानी (नंगेपन) और बदकिरदारी का दरवाज़ा खोल दिया---नौबत यहाँ तक पहुँची कि अब यूरोप और अमरीका इन्सानों की सरज़मीन नज़र नहीं आते, हैवानों और दरिन्दों के जंगल मालूम होते हैं---इस बेहयाई के जो नतीजे सामने आए, उनमें से चन्द एक ये हैं:

1- ख़वातीन का ग़ैर महफ़ूज होना।

2- ख़वातीन के इग़वा और ज़िना की वारदातें आम होना।

3– ख़वातीन में जज़्ब–ए–उमूमत (ममता) का मर जाना।

4– बदनिगाही और परागन्दा ख़्याली आ़म होना।

5– मर्दों का जिन्सी अमराज़ (गुप्त रोग) में मुब्तला होना।

6– औ़रत के तक़द्दुस का पामाल होना।

अभी कुछ रोज़ की बात है पर्दादार ख़ातून की इ़ज़्ज़त की जाती थी और अब भी की जाती है–––बसों में उसके लिये सीट ख़ाली कर दी जाती थी लेकिन बेपर्दा ख़ातून की तकरीम (इ़ज़्ज़त करने) के लिये लोग तैयार नहीं। वो बसों में जिस ह़ाल में सफ़र करे किसी को कोई सरोकार नहीं। दौरे जदीद में औ़रत की बेपर्दगी ने इस ह़द तक रूसवा किया है कि वो अख़बारों, रिसालों और इश्तिहारों की ज़ीनत बन कर नफ़ा कमाने का एक वसीला बन कर रह गई है–––जहाँ जहाँ ख़वातीन को जगह दी जाती है एह़तेराम की वजह से नहीं, तिजारत चमकाने और नफ़ा उठाने के लिये–––औ़रत पर इस्लाम की नज़र मुशफ़िक़ाना है और नए समाज की नज़र सिर्फ़ ताजिराना है–––सच्ची बात ये है कि हमारी इन्फ़िरादी और इज्तिमाई अ़ज़मतो शौकत का दारो मदार सिर्फ़ और सिर्फ़ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैरवी में है–––आ़लमी सतह़ पर हमारी रूसवाई की बड़ी वजह दिलों का इ़श्क़े मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से ख़ाली होना और अ़मल का सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से आ़री (ख़ाली) होना। ह़ज़रत उ़मर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु (वफ़ात 23 हिजरी/643–644 ई0) ने सच फ़रमायाः ''हम वो क़ौम हैं जिसको अल्लाह ने इस्लाम की बदौलत इ़ज़्ज़त दी।''[39]

---

[39] मौलाना मुहम्मद कालिक काँधलवी, पर्दा और मुसलमान ख़ातून, मतबूआ़ः कराची, पेजः 15

ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

बंगाल की सरज़मीन पर तहरीक ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत तक़रीबन **1970** ई0 से मस्लके अह्ले सुन्नत व जमाअ़त की फ़िक्र और नज़रिये को बढ़ावा देने के लिये रहनुमा–ए–अह्ले सुन्नत, इमामुत्तारिकीन, सिराजुस्सालिकीन, हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत अ़ल्लामा शाह मुहम्मद हबीबुर्रहमान क़ादिरी हाशिमी अ़लैहिर्रहमा के ख़लीफ़ा हज़रत हाजी मुद्दस्सिर हुसैन हबीबी साहब क़िब्ला की सर–बराही में दीनी ख़िदमात अन्जाम दे रही है।

मक़सद

- मुसलमानों में मज़हबी रूजहान पैदा करना, उन्हें फ़र्ज़ व वाजिब की तरग़ीब देना।
- दिलों में रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैरवी व इ़श्क़ का जज़्बा बेदार करना।
- मुसलमानों के दरमियान इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ की राह हमवार करना।
- स्कूलों में पढ़ने वाले छोटे बच्चों, नौजवानों और कारोबार से जुड़े हुए या माज़ूर हो चुके उ़म्र को पहुँचे हुए लोगों के लिये दीनी तालीम का इन्तिज़ाम करना।
- इस्लाम और मुसलमानों के तअ़ल्लुक़ से जो ग़लतफ़हमियाँ पैदा की जा रही हैं उनका सुबूतों की रोशनी में माकूल जवाब देना।
- आ़म–फ़ह्म ज़ुबान में आ़म लोगों के लिये मज़हबी किताबें छापना।
- जगह जगह दीनी व मज़हबी मज्लिसें करना।
- कुदरती आफ़तों या फ़सादों के सबब तबाह–हाल लोगों की मदद करना।

अल्लाह के करम से ये काम तीन डिपार्टमेंट

1– तालीम, 2– तब्लीग़ और 3– किताबों की पब्लिशिंग के ज़रिये अन्जाम दिये जा रहे हैं।

MADINATUL ULOOM INSTITUTE, TOPSIA

ALL INDIA TABLEEGH-E-SEERAT, KOLKATA, WB

Email: tableegh.e.seerat@gmail.com Mob. +91 9830367155